thearyasamaj.org

ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 89 अंक : 4
कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी
विक्रम संवत् 2071
कलि संवत् 5115
21 नव. से 5 दिस. 2014 तक
दयानन्दाब्द : 190
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,115
मुख्य सम्पादक :
पं. अमरसिंह आर्य
सम्पादक
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती , सीकर
श्री ओम मुनि , ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुनदेव चड्डा , कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा , जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य , अलवर
प्रकाशक :
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजापार्क, जयपुर ।
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 1 व 15
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा
सम्पादक, आर्य मार्तण्ड,
42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाइपास , जयपुर
मोबाईल – 9314032161
मुद्रक :
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स, जयपुर
ग्राफिक्स : PRINTPACK, Jaipur
ई–मेल :
aryamartand@gmail.com
dr.sudhrisharma@yahoo.com
एक प्रति मूल्य : 5 रूपया
सहायता शुल्क : 100 रूपया

महान् स्वतन्त्रता सेनानी लाला लाजपतराय के बलिदान को आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का सादर नमन

समस्त देशवासी लाला लाजपत राय के बलिदान से प्रेरणा लें

28 जनवरी, 1865 को पंजाब के मोगा जिले की धरती पर अध्यापक एवं उर्दू के प्रसिद्ध लेखक लाला राधाकृष्ण के घर एक दिव्य बालक ने जन्म लिया । जिसका नाम बड़े प्यार से लाजपतराय रखा गया। ये बचपन से ही लेखन एवं भाषण में प्रवीण थे। सरकारी कॉलेज से वकालत पास कर लेने के पश्चात् उन्होंने हिसार और लाहौर में वकालत शुरू की । अपनी कर्तव्य निष्ठा, मेहनत और ईमानदारी से ये शीघ्र ही बहुत ही प्रसिद्ध वकील बन गए । परन्तु आर्य समाज के प्रभाव के कारण इनके मन में बचपन से ही देशभक्ति की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी । लाला लाजपतराय स्वावलंबन से स्वराज्य लाना चाहते थे। और फिर कॉलेज के समय मे ही उनकी मित्रता आर्य समाजी क्रान्तिकारी युवा महात्मा हंसराज एवं पं. गुरूदत्त विद्यार्थी से हुई और तीनों ने आर्य समाज का प्रभावशाली प्रचार शुरू किया ।

1897 और 1899 में लाला लाजपतराय ने देश में आए अकाल में पीड़ितों की तन,मन और धन से सेवा की । देश में आए भूकंप, अकाल के समय ब्रिटिश शासन ने कुछ नहीं किया, लाला जी ने स्थानीय लोगों के साथ मिलकर अनेक स्थानों पर अकाल में शिविर लगाकर लोगों की सेवा का महत्तर कार्य किया ।

1905 में बंगाल का विदेशी शासन द्वारा जब विभाजन किया गया था तो लाला लाजपत राय ने सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और विपिनचन्द्र पाल जैसे आंदोलनकारियों के साथ मिलकर अंग्रेजों के इस निर्णय के विरोधी स्वर पूरे देशभर में मुखरित किए । देशभर में उन्होंने स्वदेशी आंदोलन को चलाने और आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई ।

उनका मानना था कि भारत की आजादी के स्वर ब्रिटेन में भी गूंजने चाहिए जिससे कि ब्रिटिश सरकार पर दबाव पड़े । इसलिए वे 1914 में ब्रिटेन चले गए । बहुमुखी प्रतिभा के धनी लालाजी द्वारा निरन्तर किए जा रहे सेवा कार्यों, राष्ट्र–भक्ति के कार्यक्रमों से इनकी प्रसिद्धि चहुंओर फैलने लगी और भारतीय जनमानस अंग्रेजी शासन के विरूद्ध एकजुट होने लगा । इस बढ़ते प्रभाव के कारण अंग्रेजी शासन भी अब लालाजी से भय खाने लगा । सन् 1914–20 तक लालाजी को भारत आने की इजाजत ही नहीं दी गई क्योंकि प्रथम विश्वयुद्ध में भारत से सैनिकों की भर्ती के वे विरोधी थे और उनके आने से सैनिकों में देशप्रेम के जागने की भावना प्रबल होने की सम्भावना थी । इसका दूसरा पक्ष ये भी था कि उन्हें ये बिल्कुल भी विश्वास नहीं था कि विश्वयुद्ध के बाद भारत को स्वतन्त्र करने की गांधीजी की मांग स्वीकार करं ली जायेगी । और बाद में हुआ भी ये ही । परन्तु लालाजी कहां रूकने वाले थे , वो सीधे अमेरिका चले गए और वहां लोगों को भारत की विचारधारा से अवगत करवाने के लिए **'यंग इंडिया'** नामक क्रान्तिकारी पत्र का संपादन– प्रकाशन शुरू किया । न्यूयार्क में ही उन्होंने **इंडियन इनफार्मेशन ब्यूरो** की स्थापना की और बाद में **इंडिया होमरूल संस्था** की भी स्थापना की । उनकी इस महान् तपस्या के प्रभाव से न्यूयार्क में भी भारत समर्थित वातावरण बनने लगा और इधर भारत में भी उनके कार्यों की गूंज जन–जन की आवाज बनकर सुनाई दे रही थी । व अंग्रेज सरकार पर लगातार उनको भारत बुलाने के लिए दबाव बढ रहा था ।

शेष पृष्ठ 3 पर

माता और पिता आठ-आठ वर्ष के पुत्र व कन्याओं को विद्याभ्यास, ब्रह्मचर्य-सेवन और अच्छी शिक्षा किये जाने के लिये विद्वान् और विदुषी स्त्रियों को सौंप दें। वे भी विद्या-ग्रहण करने में नित्य मन लगावें और पढ़ाने वाले भी विद्या और अच्छी शिक्षा देने में नित्य प्रयत्न करें।

thearyasamaj.org

4. **पाड्.क्तो वै यज्ञः** (मा.शत. 1.1.2.16) : **पाड्.क्तो वैयज्ञः पंच इमा अङ्गुलयः। लब्धे वैतदत्र दधाति** । अर्थात् इन पांच अंगुलियों के संस्पर्श से सभी कर्म सम्पन्न होते हैं । अतः श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ पाड्.क्त है (ऐतरेय ब्राह्मण) । यज्ञ में पाँच प्रकार की आहुतियों का विधान है। **'धानाः, करम्भः, परिवायः, पुरोडाशः, पयस्याः '** (तै. संहिता – 6.5.11.8) अर्थात् भुने हुए धान, यव, घृत संयुक्त सक्तु करम्भ, व्रीही से बनी खीलें परिवाय, पिष्ट वस्तु पुरोडाश तथा दुग्ध निर्मित पदार्थ 'पयस्या' नामक हवि कहलाती है । इन्ही पंच विध हवियों के कारण **पाड्.क्तो वै यज्ञः** कहा गया है। चार ऋत्विज तथा एक यजमान मिलकर यज्ञविधि का संचालन करते हैं। **'पंच पदा पंक्ति'** अतः यज्ञ पाड्.क्त है।

5. **अध्वरो वै यज्ञः** (मा. शत. 1.2.4.5) : माध्यन्दिन शतपथ के प्रथम काण्ड में यज्ञ को अध्वर कहा गया है। **ध्वरः हिंसा, प्रत्यवायो न विद्यतेस्मिन्नित्यध्वरशब्दस्य यज्ञोऽर्थः** (मा.शत. 1.2. 4.5) ध्वर का अर्थ है हिंसामय प्रत्यवाय (विघ्न) जिसमें पर पीड़ा, हिंसा जनित कष्ट न हो वही अध्वर अहिंसक यज्ञ कहा गया है । **"ध्वरति हिंसा कर्मा" हिंसा नास्तीत्यध्वरः स यज्ञः** (निरूक्त 1.3.3) अर्थात् हिंसार्थक 'ध्वृ' धातु से ध्वर शब्द सिद्ध होता है, जिसका अर्थ है हिंसा और इसका विलोम नञ् तत्पुरुष समास से **'न ध्वरः अध्वरः '** हिंसा रहित कर्म ही अध्वर यज्ञ है । यज्ञ विश्वकल्याणार्थ किया जाता है । हिंसा पाप है । यज्ञ में उसका विधान कदापि सम्भव नहीं है । यज्ञ शब्द तो अहिंसामय परोपकार का प्रतीक है। यज्ञ में यजमान की वाणी यज्ञ बुद्धि तथा कठोर परिश्रम से उपार्जित धनराशि का लोक हित में निष्काम भाव से प्रयोग किया जाता है, यही उसका अध्वर रूप है। यज्ञाग्नि जनित धूम से वायुमण्डल में व्याप्त परमाणुओं में परिवर्तन होता है, जिससे किसी जीव की हिंसा नहीं होती । प्रत्युत सर्वत्र मोदमय मन्द–मन्द सौरभ का प्रसार होता है । शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक जैसे विविध तापों का परिहार करने के लिए यज्ञ से बढ़कर सुखदायक अन्य कोई कर्म नहीं है । इसीलिए यज्ञ को (सुखद) अध्वर कहा है **'यज्ञो वै सुम्नम्'** (मा.शतपथ 1.3.2.1) ।

6. पुरुषो वै यज्ञः (मा.शत. 1.3.2.1) : यह वाक्य सावयव पुरुष यज्ञ का बोधक है । शतपथ ब्राह्मण के अनुसार पुरुष इस यज्ञ का विस्तार करता है । इसलिए पुरुष भी यज्ञरूप है। **"पुरुषो वै यज्ञः"** में जीव पुरुष और ब्रह्म पुरुष दोनो ही यज्ञ के प्रतीक हैं। काठक संहिता के अनुसार **'अथ खलु क्रतुमयोऽयं पुरुषः । स यावत् क्रतुमयमस्मात् लोकात् प्रेत्यैव क्रतुः हामुं लोकं प्रेत्याभिसम्भवति"** (काठक संहिता 8.2) अर्थात् यह पुरुष क्रतुमय (यज्ञमय) है। जैसा क्रतु करके इस लोक में, वैसा ही फल परलोक में प्राप्त कर कृतकृत्य हो जाता है । **पंच वै पुरुषे वीर्याणि** । पंच ज्ञानेन्द्रियों तथा पंच कर्मेन्द्रियों के बल से मनुष्य पांच प्रकार के पराक्रमों का प्रदर्शन करता है। यज्ञ भी पाड.क्त है। अतः पांच संख्यासामान्य से 'पुरुषो वै यज्ञः कहा गया है। पुरूषो हि यज्ञः माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण में पुरुष को प्रजापति कहा गया है । **"पुरुषो हि प्रजापति "** (मा. शत. 7.4.1.15) **प्रजापति स्वयं यज्ञरूप है**। अन्यत्र भी उपलब्ध होता है । **"प्रजापतिः मनसः पुरुषं निरमिमीत"** (मा. शत. 7.5.2.6) यज्ञरूप प्रजापति ने मन से पुरुष का निर्माण किया **"मनो वै सर्वे प्राणाः। मनसि हि सर्वे प्राणा प्रतिष्ठिताः । तन्मनसः पुरुषं निरमिमीत । तस्मादाहुः पुरुषाः सर्वेपशषव इति"** (मा. शत. 7.5.2.6) मन इन्द्रियों में सर्वश्रेष्ठ है। मन से ही इन्द्रियां बलवती होकर स्व–स्व व्यापारों में समर्थ होती है। मानस शक्ति से पुरुष का निर्माण हुआ । वह वैचारिक दृष्टि से सुन्दरतम मानव कहलाया । उत्पत्ति, पालन–संरक्षण में श्रेष्ठतम होने से पुरुष का यज्ञ पुरुष कहा गया । **"द्विपादै पुरुषः । पुरुषों यज्ञः "** (मा.शत. 12.2.3.22) पुरुष और यज्ञ दोनो ही द्विपात् हैं जीवन में पुरुष के दो प्रकार के व्यवहार होते हैं धर्माचरण तथा अधर्माचरण । सुमार्ग कुमार्ग गामी होता हुआ मानव अपनी जीवन यात्रा को समाप्त करता है। यज्ञ के भी दो ही मुख्य भेद हैं । दर्शेष्टि तथा पौर्णमासेष्टि । यही द्विपाद् की समानता है। अतः कहा गया है – पुरुषो यज्ञः ।

7. **यज्ञो वै वसु** (मा.शत. 1.7.1.14) : यजुर्वेद संहिता के अनुसार यज्ञ विश्व के सकल वसुओं का प्रदाता होने से **"वसु"** नाम से ही संकेतित किया गया है। यजुर्वेद के प्रथम अध्याय के तृतीय मंत्र में यज्ञीय वसु की अनन्तता को दिखाया गया है – यह यज्ञ शत–सहस्त्र अर्थात् असंख्य कल्याणकारी वसुओं को प्रदान करता है। परमेश्वर के इस शोभन फलदायक यज्ञ से कामानायें सफल हों–

" वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः । (यजुर्वेद – 1.3) वस्तुतः यज्ञ के द्वारा आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति, द्रविण (धन) ब्रह्मतेज आदि सभी कुछ प्राप्त होता है।

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् । आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् । मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ।। (अथर्ववेद 19.71.1) अग्नि, पृथ्वी, वायु, अन्तरिक्ष, आदित्य, द्युलोक, चन्द्रमा, नक्षत्र ये आठ वसु कहे गये हैं। पौष्टिक सुगन्धित, मधुर रोगनाशक हवि एवं पुरोडाश से संस्कार (शुद्ध) की गई यज्ञाग्नि भी वसु है। इसे वसुधारा से देवों ने तृप्त किया है। हवि से तृप्त अग्नि ने भी पुनः देवों का सन्तर्पण किया। यह अग्नि अनन्त वसुधाराओं के साथ यजमान के अन्तः करण तथा बाह्यलोक में प्रकट होती है। यज्ञ का मुख वसुओं से परिपूर्ण है।

क्रमशः.....

– डॉ. सुधीर शर्मा,

अच्छी शिक्षा के बिना मनुष्यों के सुख के लिए और कोई भी आश्रय नहीं है। इसलिये सबको उचित है कि आलस्य और कपट आदि कुकर्मो को छोड़ के विद्या के प्रचार के लिए सदा प्रयत्न किया करें । - महर्षि दयानन्द सरस्वती

thearyasamaj.org

पुस्तक विमोचन

ऋषिमेला 2014 के अवसर पर 31 अक्टुबर को टंकारा श्री अरूणा सतीजा द्वारा लिखित पुस्तक 'सत्य बाल महाभारत' का विमोचन किया गया। उक्त पुस्तक में विदूषी लेखिका ने विशाल महाभारत ग्रन्थ की विषय वस्तु का सार रूप में सतर्क उपस्थापन किया है।

डा. सुधीर शर्मा

योग – परिचय :

'योग' शब्द संस्कृत की युज् धातु से बना है जिसका अर्थ समाधि और मिलाना है। "**युज समाधौ, युजिर योगे**" – (पाणिनीय धातु पाठ) । महर्षि व्यास ने भी योग को समाधि का वाचक माना है – "**योगः समाधिः**" – (व्यासभाष्य 1/1) जिसमें मन को भलीभॉति समाहित किया जाए उसे समाधि और आत्मा–परमात्मा के मेल को योग कहते हैं। योगदर्शन के अनुसार चित्तवृत्तियों का निरोध ही योग है – "योगश्चित्तवृत्ति निरोधः"(यो.द. 1/2) , वासिष्ठसंहिता ने मन को शान्त करने के उपाय को योग कहा है –मनः प्रशमनापायो योग इत्यभिधीयते (योगवासिष्ठ) । कठोपनिषद् के अनुसार जब पाँचों ज्ञानेन्द्रियॉ मन के सहित निश्चल हो जाती हैं, बुद्धि का व्यापार भी रुक जाता है, इस स्थिति को योग कहते हैं। निश्चय से ज्ञान की उत्पत्ति और कर्म का क्षय ही योग है –

यदा पंचावतिष्ठन्ते ज्ञानामि मनसा सह।
बुद्धिश्च न विचेष्टते तामाहुः परमां गतिम् ।।
तां योगमिति मन्यन्ते स्थिरामिन्द्रियधारणाम् ।
अप्रमत्तस्तु सदा भवति योगो हि प्रभवाप्ययौ ।।
– कठो. 2/3 ।।

महर्षि चरक ने मन का इन्द्रिय एवं विषयों से पृथक् होकर आत्मा में स्थिर होना ही योग बतलाया है। (च.शारीर. 1. 138–39) । गीता में "समत्वं योग उच्यते" और "योगः कर्मसु कौशलम्" ये दो परिभाषाएँ योग की दी हैं। कर्म की सिद्धि (सफलता असिद्धि दोनों में निष्कामभाव से कर्मों को करना ही समत्व है। समबुद्धियुक्त पुरुष पाप और पुण्य दोनों को इसी लोक में त्याग देता है। कर्मों को निष्कामभाव से, फल की इच्छा न रखकर कर्तव्यभाव से करना ही योग है। अमरकोष में योग को ध्यान और संगति का वाचक माना है।

समाधि, संगति और समत्व ये ध्यान देने योग्य हैं । चित्तवृत्ति–निरोध या परमात्मा में स्थिति को समाधि कहते हैं इसका फल संगति या समत्व बुद्धि की प्राप्ति है सुख – दुःख, लाभ–हानि, मान–अपमान के अवसर उपस्थित होने पर भी कर्तव्य कर्मों को फल की इच्छा त्यागकर करना समत्व कहलाता है और शरीर के विभिन्न तन्त्रों के कार्य, मन बुद्धि और आत्मा के व्यवहारों में संगति एकरूपता कही जाती है।

योग का फल

- आत्मा की अपने स्वरूप में स्थिति (यो.द. – 1/3) ज्ञान का उदय और कर्म का क्षय होकर परमात्मा का साक्षात्कार होता है।
- योगाभ्यास से शरीर में हलकापन, नीरोगता, मन की स्थिरता, शरीर में ओज की वृद्धि, सुगन्ध एवं रोग–शोक से छुटकारा होता है।
- अविद्या का नाश होकर ऋतम्भरा प्रज्ञा की प्राप्ति होती है। (यो.द. – 1/48) यह प्रज्ञा वस्तु के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान कराने में समर्थ होती है ।

अनिल आर्य, जयपुर

समस्त देशवासी लाला लाजपत राय के बलिदान से प्रेरणा लें

पृष्ठ 1 का शेष

आखिर हार कर प्रथम विश्वयुद्ध के बाद 1920 में अंग्रेज सरकार को उन्हें भारत आने की स्वीकृति देनी पड़ी । इस समय तक उनकी लोकप्रियता आसमान पर थी । जब वे भारत लौटे तो उन्होंने गांधी जी द्वारा चलाये जा रहे असहयोग आन्दोलन का पंजाब में नेतृत्व किया । उनके जैसे महान् व्यक्तित्व का नेतृत्व पाकर असहयोग आन्दोलन किसी दावानल की भांति तेजी से पूरे पंजाब में फैलने लगा । लालाजी द्वारा किये जा रहे इन्हीं असाधारण कार्यों के कारण उन्हें पंजाब केसरी के सम्बोधन से पुकारा जाने लगा । "चोरा–चौरी हत्याकांड" के पश्चात् असहयोग आन्दोलन के रोकने के कारण वे गांधीजी की विचारधारा से असहमत और असंतुष्ट हो गए । उन्हें समझ में आ गया कि गांधी जी की ये नीति देश के लिए उपयोगी नहीं है। इसलिए उन्होंने कांग्रेस इंडिपेंडेंस पार्टी बनायी और धुंआधार कार्य करने लगे ।

1928 में ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाये गये साइमन कमीशन के विरोध में निकाले गये मार्च में लाखों लोगों का जुटना उनके इसी महान् प्रभाव का सुपरिणाम था । परन्तु यह दिन उनके और पूरे देश के लिए दुर्भाग्य की काली छाया वाला रहा । क्योंकि अंग्रेज सरकार द्वारा उनके सिर पर बरसाई गई ताबड़तोड़ लाठियों से उनको इतनी अधिक चोटें आई कि वो हमें सदा–सदा के लिए जगाकर स्वयं सो गए । जाते–जाते उन्होंने ये कहा था कि मेरे शरीर पर पड़ी एक–एक लाठी अंग्रेजी सरकार के ताबूत में कील का काम करेंगी। यही हुआ, उनके बाद शहीद भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरू,रामप्रसाद सुखदेव, बिस्मिल आदि अनेक क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया।

शान्ति एवं शक्ति के पुंज लालाजी युवाओं के ही नहीं वृद्धों, महिलाओं, बच्चों के भी आदर्श थे। ऐसे महान् सपूत के जीवन से हम सभी देशवासियों को प्रेरणा लेनी चाहिए ।

डॉ. सुधीर शर्मा

जिस व्यक्ति का पुत्र उसके नियंत्रण में हो, जिसकी पत्नी आज्ञानुसार काम करे और जो मनुष्य अपने कमाये हुए धन से सन्तुष्ट हो ऐसे व्यक्ति के लिए यह संसार ही स्वर्ग है। -आचार्य चाणक्य

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित भव्य "ऋषि मेला –2014" का समापन

महर्षि दयानन्द के निर्वाण के 131 वर्ष पूरे होने के अवसर पर अजमेर स्थित "ऋषि उद्यान" में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी परोपकारिणी सभा द्वारा "ऋषि मेला–2014" का आयोजन किया गया । 31 अक्टू. से 2 नव.,2014 तक आयोजित किया गया । इस अवसर पर देशभर से ऋषि भक्त पधारे, जिन्होंने मेले के विभिन्न समसामयिक सत्रों वेद–गोष्ठी व यज्ञीय प्रवचनों में अनेक विद्वानों से मार्गदर्शन प्राप्त किया । इस अवसर पर प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु–अबोहर, आचार्य विजयपाल –प्रधान, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा, आचार्य सूर्या देवी जी चतुर्वेदा, डॉ. वेदपाल जी –बागपत, श्री सत्येन्द्र जी –मेरठ, डॉ.राजेन्द्र जी विद्यालंकार, डॉ. वागीश जी – मुम्बई आदि आर्य विद्वान पधारे। तथा आर्य जनता को पं. सत्यपाल पथिक, श्री भूपेन्द्र सिंह, पं.नौबतराम जी , ब्रह्मचारी रामदयाल के सुमधुर भजनों के रसास्वादन का अवसर भी प्राप्त हुआ ।

इस अवसर पर विभिन्न सत्रों में दक्षिण भारत में बलिदान परम्परा, महर्षि दयानन्द एक राष्ट्रपुरुष, आतंकवाद व भ्रष्टाचार का कारण, वर्तमान में आर्य समाज की कार्यप्रणाली, महर्षि दयानन्द आर्ष गुरूकुल स्नातक सत्र, आर्य युवा सम्मेलन आदि मुख्य कार्यक्रम हुए ।

यज्ञ 27 अक्टू. को प्रातः काल प्रारम्भ हुआ तथा पूर्णाहुति कार्यक्रम 2 नव. को डॉ. वागीश जी मुम्बई के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ । वेदगोष्ठी में "भारतीय मत–सम्प्रदाय और वेद" विषय पर देशभर से पधारे विद्वानों ने अपने शोधपूर्ण एवं मौलिक विचार प्रस्तुत किए। गोष्ठी का संयोजन व संचालन ज्ञानेन्द्र आर्य ऋषि उद्यान द्वारा किया गया ।

<u>वेद प्रतियोगिता</u> – ऋषि मेले में "चतुर्वेद–कंठस्थीकरण प्रतियोगिता" का आयोजन किया जाता है, जिसमें 21 वर्ष की अवस्था वाले वेदपाठी छात्र भाग ले सकते हैं, जिन्होंने कम से कम 1 वेद कंठस्थ किया हो। इस बार 21 विद्यार्थियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया । शुक्ल यजुर्वेद में प्रथम स्थान मनोज तिवाड़ी, द्वितीय स्थान इन्द्रदेव पाण्डेय तथा तृतीय स्थान विश्रुति आर्या, गुरूकुल चोटीपुरा ने प्राप्त किया । सामवेद में विश्वाची आर्य एवं दीपशिखा आर्या ने क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया ।

– आचार्य कर्मवीर , ऋषि उद्यान , अजमेर

<u>ऋषि मेला दर्शन</u>

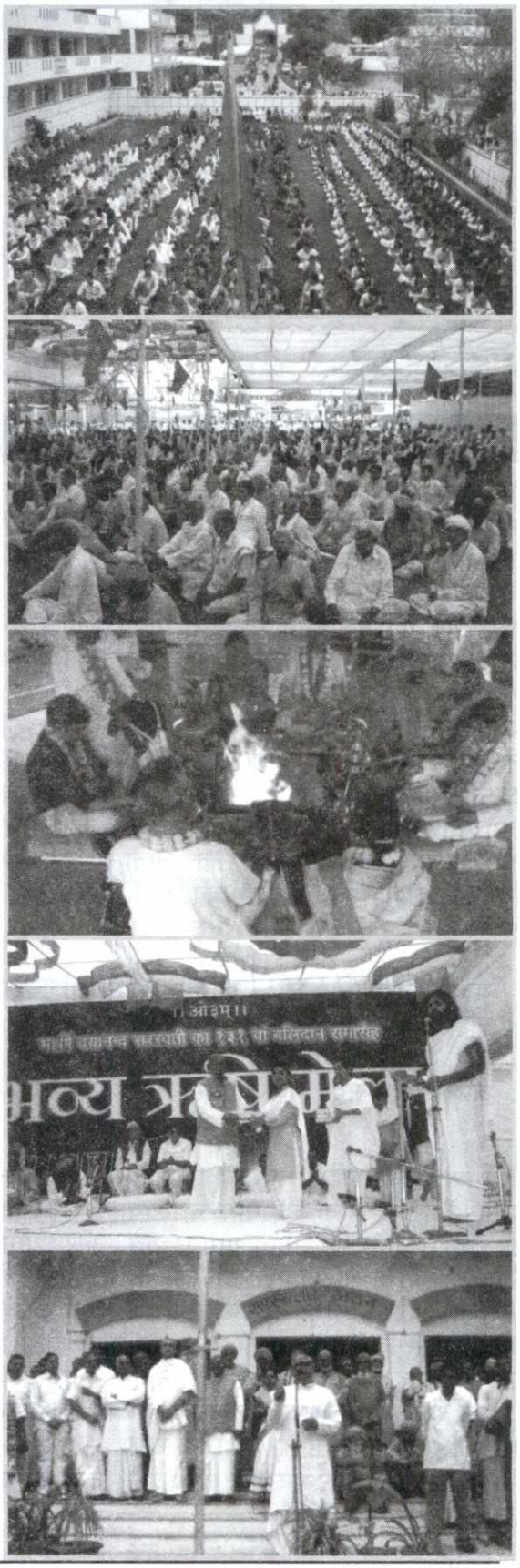

मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने हारा है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हठ दुराग्रह तथा अविद्या आदि दोषों के कारण सत्य को छोड असत्य की ओर झुक जाता है। -सत्यार्थ प्रकाश भूमिका

thearyasamaj.org

सार्वदेशिक आर्य वीर दल , जयपुर की ओर से "मासिक संगोष्ठी" का आयोजन

सार्वदेशिक आर्य वीर दल की जयपुर जिला इकाई द्वारा विभिन्न ग्रामीण, नगरीय इकाईयों द्वारा स्थानीय स्तर पर मासिक आर्य वीर एकत्रीकरण / संगोष्ठी का कार्यक्रम 9 नव., 2014 रविवार को सायं 4–6 बजे तक आयोजित किया गया । जिसमें संगठन से जुड़े हुए आर्यवीरों, युवाओं ने भाग लिया ।

वैशाली नगर स्थित आर्य समाज भवन में आयोजित जयपुर नगरीय कार्यक्रम में यज्ञ संचालन एवं मन्त्रपाठ के साथ मधुर भजनों की प्रस्तुति जिला संचालक श्री दीपक शास्त्री द्वारा दी गई । कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित आर्य वीर दल, दौसा जिला संचालक श्री योगेश आर्य ने संगठन की विचारधारा को सुस्पष्ट करते हुए वर्तमान समय में राष्ट्र की समस्याओं के निराकरण में आर्य वीर दल की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए समाधान की ओर बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया ।

कार्यक्रम के अन्तर्गत समस्या–समाधान सत्र में अनेक युवाओं , आर्य वीरों के साथ–साथ जर्मन भाषा सीख रहे आर्य वीर सौरभ ठाकुरिया ने आधुनिक युवाओं का प्रतिनिधि बन अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त किया ।

संगठन की ग्रामीण इकाई –बगवाड़ा – चौंप की ओर से वोंखला–आश्रम , चीथवाड़ी में भी सायं 4–6 बजे तक आयोजित कार्यक्रम में विशेष यज्ञ की समाप्ति के पश्चात् आर्य वीर रवि शर्मा आदि ने मधुर भजन एवं देशभक्ति गीतों की भावभीनी प्रस्तुति दी । कार्यक्रम में श्री हनुमान जी आर्य ने उपस्थित सभी आर्य वीरों एवं युवाओं को संगठन एवं व्यक्तिगत जीवन में समन्वय स्थापित करते हुए बेहतर कार्य करने सम्बन्धी विषय पर मार्गदर्शन किया ।

ज्ञातव्य है कि यह कार्यक्रम स्थानीय स्तर तक संगठन में एकरूपता स्थापित करने एवं संगठन से जुड़े हुए युवाओं, आर्य वीरों को विचारधारा की दीक्षा देने के साथ–साथ उनकी समस्याओं का निराकरण कर उन्हें स्वस्थ व उन्नतिशील बनाने हेतु आरम्भ किया गया है।

– अनिल आर्य , संभाग मंत्री, आर्य वीर दल, जयपुर।

आर्य समाज कोटपूतली ने मनाया एकता दिवस

सरदाल पटेल की जयन्ती के उपलक्ष्य में मनाये जा रहे एकता दिवस के तहत आर्य समाज, कोटपूतली की ओर से ओम् नमः शिवाय स्कूल में कार्यक्रम का आयोजन किया गया , जिसकी अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान श्री धर्मपाल जी ने की तथा मुख्य अतिथि श्री अनुसूचित जनजाति प्रकोष्ठ के प्रदेश कोषाध्यक्ष श्री मनोज जी भूषण रहे ।

कार्यक्रम का आरम्भ श्री अशोक जी आर्य के सान्निध्य में यज्ञ आयोजित कर किया गया । यज्ञ के पश्चात् मुख्य अतिथि भूषण जी एवं कार्यक्रम के अध्यक्ष मनोज जी ने सरदार पटेल के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके जीवन से प्रेरणा लेने हेतु प्रेरित किया । अन्त में विद्यालय व्यवस्थापक श्री रामस्वरूप सैनी जी ने विद्यार्थियों को देश की एकता व अखण्डता को बनाये रखने की शपथ दिलाई तथा अतिथियों को साहित्य भेंट कर सम्मान किया ।

– रमेश कुमार आर्य, मंत्री

कार्यालय सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक 30–11–2014 रविवार को प्रातः 11.00 बजे से आर्य प्रतिनिधि सभा भवन, राजापार्क , जयपुर में रखी गई है। अन्तरंग सभा के समस्त अधिकारियों एवं सदस्यों की उपस्थिति उक्त मीटिंग में अपेक्षित है। मीटिंग के विचारणीय बिन्दु अग्रांकित हैं

- विगत मीटिंग की सम्पुष्टि ।
- सभा के विभिन्न कार्यों के निष्पादन सम्बन्धी विचार विमर्श एवं निर्णय ।
- वेद प्रचार कार्य सम्बन्धी विचार विमर्श ।
- अन्य आवश्यक विषय प्रधान जी की स्वीकृति से ।

डॉ. सुधीर शर्मा

स्वराज्य का प्रथम उद्घोष महर्षि दयानन्द ने ही किया था, यह आर्य समाज ही था जिसने भारतीय समाज की पटरी से उतरी गाडी को फिर से पटरी पर लाने का कार्य किया, अगर आर्य समाज न होता तो भारत, भारत न होता -अटल बिहारी वाजपेयी

thearyasamaj.org

डी ए वी पब्लिक स्कूल, वैशाली नगर में रक्तदान शिविर सम्पन्न

जयपुर! वैशाली नगर स्थित डी ए वी सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल में रविवर 09–11–2014 को महात्मा हंसराज रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 200 यूनिट से अधिक रक्त संचय किया गया। विद्यालय के प्राचार्य श्री अशोक कुमार शर्मा, मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा व आर्य युवा समाज, राजस्थान ने प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि महान् शिक्षाविद्, समाजसेवी व त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज के 150वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय स्तर पर 15000 यूनिट रक्तदान का विराट लक्ष्य रखा गया था। लोगों में जीवनदायी रक्तदान के प्रति जागरूकता को ध्यान में रखते हुए दिनांक 03–11–2014 से 09–11–2014 तक छात्रों द्वारा स्लोगन, पोस्टर, भाषण, कविता, लघुफिल्म व जनचेतना रैली जैसी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया था, जिसका समापन रविवार, दिनांक 09–11–2014 को प्रातः 09 बजे से सायं 04 बजे तक रक्तदान शिविर के रूप में हुआ। शिविर का शुभारम्भ रविवार को प्रातः 09 बजे यज्ञ के द्वारा किया गया, जिसमें पूर्व राज्यपाल मेघालय, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड श्री बी एल जोशी, राजस्थान के प्रथम पुलिस आयुक्त; श्री बी एल सोनी, निदेशक, पुलिस अकादमी राजस्थान, श्री सुरेश मिश्रा, संस्थापक अध्यक्ष, युवा संस्कृति संस्थान, श्री एम एल गोयल, निदेशक डीएवी राजस्थान–1 समेत अनेकानेक गणमान्य जनों ने आहुतियॉ दी। पूर्व राज्यपाल श्री बी एल जोशी ने कहा कि डी ए वी अन्य शिक्षण संस्थाओं से अलग हटकर समाज सेवा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रहा है, यह प्रसन्नता का विषय है।

प्राचार्य श्री अशोक कुमार शर्मा ने जयपुर नगर के सभी प्रबुद्ध व संवेदनशील रक्तदाताओं का इस जीवन यज्ञ में सम्मिलित होने पर धन्यवाद किया।

–श्री अशोक कुमार शर्मा , प्राचार्य

वैदिक विधि से 'पूर्णिमा सत्संग' समारोह पूर्वक संपन्न

कोटा, 7 नवम्बर। आर्य समाज विज्ञाननगर, कोटा की ओर से कार्तिक पूर्णिमा एवं गुरूनानक जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित पूर्णिमा वैदिक सत्संग में डीएवी स्कूल के धर्म शिक्षक शोभाराम जी आर्य के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ । यज्ञ की समाप्ति के पश्चात् उद्‌बोधन देते हुए उन्होंने कहा कि कार्तिक माह का नाम कृतिका नक्षत्र के नाम पर रखा गया है। और इस नक्षत्र के प्रभाव के कारण ही कार्तिक पूर्णिमा का विशेष महत्व है। कार्यक्रम में आगे मुख्य वक्ता आर्य विद्वान् श्री रामप्रसाद जी याज्ञिक ने सत्संग के अर्थ व महत्व के सम्बन्ध में विचार प्रस्तुत करते हुए 'विवेक' का अर्थ समझाया । आर्य समाज विज्ञाननगर के मंत्री राकेश चड्‌ढा ने जानकारी देते हुए बताया कि आज विशेष रूप से कार्तिक पूर्णिमा तथा गुरूनानक देव जी की जयन्ती पर इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री अर्जुनेदव चड्‌ढा के गुरूनानक के जीवन सम्बन्धी अध्यक्षीय उद्‌बोधन के अतिरिक्त डॉ. केएल दिवाकर व प्रधान जेएस दुबे ने भी अपने–अपने विचार रखे।

कार्यक्रम में चन्द्रप्रकाश भारद्वाज ने प्रभु भक्ति का भजन सुनाया। संचालन आर्य समाज के मंत्री राकेश चड्‌ढा ने किया। शांतिपाठ एवं जयघोष के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

–राकेश चड्‌ढा,मंत्री

शिक्षकों को अपने अनुयायियों में खोज, रचनात्मकता, उद्यमिता और नैतिक भावना भरने को कार्य करना चाहिए। शिक्षक को अपने शिष्यों का आदर्श बनना चाहिए और इसके लिए उसे एक समर्पित और अनुशासित जीवन जीने की जरूरत होती है -एपीजे अब्दुल कलाम, पूर्व राष्ट्रपति

thearyasamaj.org

डा. कुलवन्त गौड़ का आर्य समाज ने किया सम्मान ।

''शाइनी इंडिया'' के माध्यम से नेत्रदान के क्षेत्र में लोगों को प्रेरित करने एवं नेत्रदान करवाने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए नेत्र चिकित्सक डा. कुलवन्त गौड़ को आर्य समाज, गायत्री बिहार, कोटा द्वारा दीपावली पर्व के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में शॉल एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया ।

समारोह में नगर के आर्य सभासदों ने उत्साह के साथ भाग लिया ।
कार्यक्रम का संचालन मंत्री उमेश कुर्मी ने किया ।

आर्य समाज, खातन खेड़ा, बहरोड़ ने मनाया वार्षिकोत्सव

खातनखेड़ा , बहरोड़ जिला अलवर स्थित आर्य समाज का वार्षिकोत्सव दिनांक 18 व 19 अक्टू.,2014 को मनाया गया , जिसमें पं. नरदेव जी भरतपुर ने ईशभक्ति से ओत'–प्रोत भजनों की प्रस्तुतियां दी । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डी.ए.वी. स्कूल, बहरोड़ के प्रिंसीपल श्री राजेन्द्र जी गौतम ने अपना उद्‌बोधन दिया । इसके अतिरिक्त योगेश दत्त जी, बिजनौर; डॉ. वीरपाल , बहन कलावती, स्वामी रामदेव, जोणायचा–खुर्द; यशदेवजी, महेन्द्रभाई जी आदि आर्य विद्वानों ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए ।

– अरूण आर्य

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में 6 दिवसीय आयुर्वेदिक ओरियेन्टेशन ट्रेनिंग प्रोग्राम शुरू

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में 3 नव. से आरम्भ हुए 6 दिवसीय आयुर्वेदिक डाक्टर के लिए ओरियेन्टेशन ट्रेनिंग प्रोग्राम के उद्‌घाटन सत्र में अखिल भारतीय मोरार जी देसाई योग संस्थान के निदेशक डॉ0 ईश्वर वास्वारेड्डी मुख्यअतिथि के रूप में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि प्राचीन भारतीय योग पद्धति में आहार–विहार की शुद्धता पर बल देकर योग द्वारा बिना दवाईयों के ही रोगी को ठीक करने की बात की गई है। योग साधना का मुख्य प्रयोग मन की साधना पर काबू करने के लिए है। ऋग्वेद से लेकर आज तक विश्व में हर क्षेत्र में आविष्कार के साथ ही आधुनिकीकरण की व्यवस्था लगातार चल रही है। यदि योग के मूल सिद्धांतों को समझ कर अभ्यास किया जाए तो उससे शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक शुद्धि कर मनुष्य सच्चिदानंद परमात्मा का साक्षात्कार कर सकता है।कार्यक्रम के अध्यक्ष कुलपति डॉ0 सुरेन्द्र कुमार ने योग की प्राचीनता, प्राचीन चिकित्सा शैली एवं चिकित्सा व्यवस्था पर अपने विचार व्यक्त किए। विशिट अतिथि डॉ0 अरुण कुमार त्रिपाठी, निदेशक, उत्तराखण्ड आयुष विभाग ने भी योग एवं आयुर्वेद के वर्तमान समय में महत्व पर प्रकाश डाला । संकायाध्यक्ष डॉ0 आर0सी0 दुबे ने समस्त प्रतिभागियों का स्वागत किया। संयोजक प्रो0 ईश्वर भारद्वाज ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन डॉ0 अजय मलिक ने किया। कार्यक्रम में विशिष्ट रूप से प्रो0 सुभाष वेदालंकार, प्रो0 विवेकी, डॉ0 आर0 के0 एस0 डागर, प्रो0 राजेन्द्र अग्रवाल, प्रो0 एल0पी0 पुरोहित, प्रो0 सत्यदेव निगमालंकार, श्री नलनीश विग, प्रो0 प्रभात सेंगर, डॉ0 प्रदीप कुमार जोशी, कर्नाटक, त्रिपुरा , उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान तथा हरियाणा प्रान्त से आए आयुर्वेद के डाक्टर, डॉ0 सुरेन्द्र त्यागी, डॉ0 राकेश गिरी, डॉ0 उधम सिंह आदि उपस्थित थे

– डा. प्रदीप कुमार जोशी जनसंपर्क अधिकारी

मेरी सफलता इस बात में नहीं है कि ए या बी मेरे बारे में क्या सोचता है। मेरी सफलता इस बात में है कि मैं अपने काम में क्या कर दिखाता हूं। शिक्षा इस दिशा में हमारा मार्गदर्शन करती है। - होमी जहांगीर भाभा, वैज्ञानिक

thearyasamaj.org

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-221 / 2014-2016 / आर. एन. आई नं.10471/60

आवश्यक सूचना

- आर्य मार्तण्ड के समस्त सदस्यों, पाठकों से निवेदन है कि अपने सुझाव, प्रतिक्रियाएं, कार्यक्रम आदि की विज्ञप्तियां, लेख, सूचनाएं हमें aryamartand@gmail.com पर ई–मेल करें, अथवा अग्रलिखित पते पर भेजें **डॉ सुधीर शर्मा, 42 मुक्तानंद नगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर–302018**
- आर्य मार्तण्ड को भेजी गई कोई भी रचना को प्रकाशित होने में अधिकतम 2–3माह तक का समय लग सकता है
- कृपया अपनी सूचनाएं, लेख,सुझाव,विचार,रचनाएं, समाचार आदि सभी हिन्दी फोन्ट "DevLys010" में ही टाइप करके **aryamartand@gmail.com, dr.sudhrisharma@yahoo.com**पर ई–मेल करें
- आर्य मार्तण्ड को प्रकाशनार्थ भेजी गयी सामग्री के लिफाफें के ऊपर अथवा पत्र के ऊपर "प्रकाशनार्थ" अवश्य लिखें।

— सम्पादक

प्रतिक्रिया

आदरणीय डॉ. सुधीर शर्मा जी ,
सम्पादक, आर्य मार्तण्ड,

आर्य मार्तण्ड का नवीनतम अंक 5 नव. से 21 नव. , 2014 का देखा, पढ़कर प्रसन्नता हुई । आर्य समाज की राष्ट्रवादिता अतुल्य है और यह अंक उसी राष्ट्रवादिता को प्रखर रूप में प्रदर्शित करता है। एक ओर इसका सम्पादकीय देश के प्रधानमंत्री द्वारा संचालित राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान से जोड़ते हुए वेदों की पवित्र भावना एवं आर्य समाज के कृत संकल्प को उद्धृत करता है, वहीं दूसरी ओर गोपालन का संकल्प, यज्ञ मीमांसा, जैसे आलेख शुद्ध मन, शुद्ध पर्यावरण, श्रेष्ठ व सम्पन्न राष्ट्र निर्माण की ओर कार्य करने हेतु प्रेरित करते हैं। "बैटरी–निर्माण विधि " के सम्बन्ध में संकलित किया गया आलेख भी हमारे प्राचीन गौरवमयी ज्ञान–विज्ञान और महान् ऋषियों के तत्व–चिन्तन को दर्शाता है।

इसमें समस्त संस्था समाचार बड़े ही सुन्दर, व्यवस्थित एवं आकर्षक ढंग से प्रकाशित किये गये हैं। नये जुड़े शीर्षक "आवश्यक सूचना", "प्रतिक्रिया", "आगामी कार्यक्रम", "आर्य जगत् समाचार" आदि शीर्षक अधिकाधिक पाठकों को जोड़ने एवं बनाये रखने में सक्षम हैं।

इस सम्बन्ध में मेरा सुझाव है कि पत्र का आरम्भ एक वेद मन्त्र और उसकी व्याख्या के साथ होवें । मुझे विश्वास है कि आपके सम्पादन में यह पत्र और भी अधिक समृद्ध व पठनीय होगा।

श्री जगदीशप्रसाद आर्य (जखराना)
उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
अध्यक्ष, आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जिला– अलवर

आगामी कार्यक्रम : नव. 2014

आगामी कार्यक्रम : नव. 2014

- 26–30 नव. , 2014 नगीना में वेदकथा का विदुषी सविता आर्या एवं भजनोपदेशक श्री बच्चू सिंह जी , मथुरा वाले के सान्निध्य में आयोजन ।
- 7 दिस., 2014 को सायं 4 बजे से 6 बजे तक सार्वदेशिक आर्य वीर दल , जयपुर जिला की स्थानीय इकाईयों द्वारा विभिन्न स्थानों पर "मासिक आर्य वीर सम्मेलन एवं विचार गोष्ठियों" का आयोजन ।
- 5,6,7, दिस.,2014 को आर्ष ज्योति गुरूकुल आश्रम कोसरंगी, महासमुन्द (छ.ग.) में वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन का आयोजन ।
- 24–30दिस.,2014 सार्वदेशिक आर्य वीर दल की ओर से बीकानेर संभागीय "योग, व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर "का महर्षि दयानन्द उ.मा. विद्यालय (डीएवी), नई मण्डी, घड़साना में आयोजन।
- 24–31 दिसम्बर, 2014 सार्वदेशिक आर्य वीर दल, राजस्थान का प्रान्तीय शिविर आर्य समाज, सुमेरपुर पाली में आवासीय शीतकालीन "योग, व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर " का आयोजन ।
- 25–31 दिस.,2014 तक पुरानी अनाज मण्डी, गंगापुर सिटी में "यजुर्वेद पारायण महायज्ञ" का आर्य समाज, भगवती नगर, गंगापुर सिटी द्वारा आयोजन ।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर ज... द्वारा मुद्रित। मु. सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री-आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषित

प्रेषकः-
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर–302004

यूको बैंक **A/c No.:18830100010430** तिलक नगर, ...पुर

विशेष - आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।